शिखर 4

इकाई 1: प्रकृति और पर्यावरण

पाठ 1. सूरज और दीप

कविता का उद्देश्य

प्रस्तुत कविता में प्रकृति चित्रण के माध्यम से शिक्षा का महत्त्व बताया गया है। इस कविता का उद्देश्य बच्चों को अज्ञान रूपी अंधकार से निकालकर शिक्षा रूपी ज्ञान के दीप की ओर अग्रसर करना है।

कविता का सारांश

इस कविता में प्रकृति का मनोहारी चित्रण करते हुए कवि कहता है कि बिना तेल और बाती के सूरज रूपी दीपक दिनभर जलता रहता है। यह रात को जलने वाले दीपों के जलने से पहले पश्चिम दिशा में अस्त हो जाता है। आसमान का यह सूरज धरती के कण-कण को रोशन करता है। यह ऊँच-नीच का भेद मिटाकर अर्थात् बिना किसी भेदभाव के सबके जीवन का अँधेरा दूर करता है। सूरज सुबह की अपनी सुनहरी किरणों के साथ नया सवेरा लेकर आता है। सूरज से हमारा तन, मन, जीवन का नाता है अर्थात् धरती पर सूरज के कारण ही जीवन संभव है। भारत माता के आँगन में एक ऐसा दीप प्रज्वलित है जिसके आगे नीले आसमान में अस्त होता सूरज भी लज्जित हो जाता है। वह शिक्षा रूपी दीप है, जो दिन-रात जलता है। वह समाज के हर व्यक्ति के हृदय में ज्ञान रूपी प्रकाश फैलाता है।

अध्यापन संकेत

कविता वाचन से पूर्व बच्चों से **पहले पहल** में पूछे गए प्रश्नों पर चर्चा करें। बच्चों से कविता का सस्वर वाचन करने के लिए कहें। कविता की पंक्तियों के बीच-बीच में बोध आधारित प्रश्न पूछें।

- कविता की पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट करें–

  नभ मंडल का सूरज है वह ..... अंधकार सबका हरता है।

  इन पंक्तियों में कवि ने सूरज की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि आसमान का सूरज धरती के कण-कण को रोशन करता है। वह बिना किसी भेदभाव के सबके जीवन का अंधकार मिटाता है।

- बच्चों से पूछें–
  - शिक्षा का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है?
  - यदि सूरज न निकले तो क्या होगा?
- कविता के कठिन शब्दों के अर्थ समझाइए।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।